अपनी माटी
अपनी माटी

शोध आलेख : असमिया कहानी में समाज का प्रतिफलन / डॉ. नगेन शइकिया, डॉ. जोनाली बरुवा

असमिया कहानी में समाज का प्रतिफलन
- कथाकार डॉ. नगेन शइकिया, डॉ. जोनाली बरुवा

शोध सार : प्रत्येक जागरूक रचनाकार समाज की इच्छा, आकांक्षा, कल्पना, अभाव, दुर्दशा इत्यादि को अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। गतिशील समाज के अनेक रूपों को साहित्य ही मूर्त रूप देता है। नए युगों में सार्वजनीन तत्त्व की विद्यमानता शाश्वत है। प्रवहमान जीवन से कहानीकार की अनुभूति मात्र एक घटना को आहरित करती है और उस अनुभव के माध्यम से कहानीकार का व्यक्तित्व अभिव्यक्त होता है।

बीसवीं सदी के पचास के दशक से ही कहानी लेखन आरंभ कर साठ के दशक में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाले असमिया साहित्य के कथाकार डॉ. नगेन शइकिया की कहानियों का कथ्य और शिल्प जटिल और अनूठा है। मनुष्य की अमूर्त विचारधाराओं को विविध प्रकार से मूर्तमान करने का सफल प्रयास शइकिया की कहानियों में दिखाई देता है। प्रखर समाज सचेतक लेखक नगेन शइकिया की कहानियों में सामाजिक जीवन किस प्रकार प्रतिफलित हुआ है, उसी को देखने का प्रयास इस लेख में किया जाएगा।

बीज शब्द : समाज, समय, जीवन, अमूर्त, स्वार्थ, आकांक्षा, अन्याय, भ्रष्टाचार, मुखौटा, संस्कार, अस्तित्व।

मूल आलेख :

कहानीकार नगेन शइकिया : असमिया कहानी को विविधता प्रदान करने वाले और पाठक समाज को नवीन आह्लाद प्रदान करने वाले कहानीकार नगेन शइकिया की कहानियों में सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग पारिवारिक जीवन किस तरह मुखरित हो उठा है उसका अध्ययन इस लेख का मुख्य उद्देश्य है।

असमिया गल्प साहित्य में डॉ. नगेन शइकिया जी का अप्रतीम अवदान है। स्कूल में नवीं कक्षा में पढ़ते हुए ही कहानी लेखन का श्रीगणेश करने वाले शइकिया जी साठ के दशक के आरंभ से स्तरीय कहानीकार के रूप में पहचाने जाने लगे। उस समय की असमवाणी, रामधेनु, मणिदीप, नीलांचल इत्यादि पत्र-पत्रिकाओं के पन्नों में शइकिया की अनेक कहानियाँ प्रकाशित होने लगीं। डॉ. शइकिया के कहानी संकलन हैं– 1. कुबेर हाती बरुवा, 2. छबि आरु प्रेम, 3. बंध कोठात धुमुहा, 4. अस्तित्वर शिकलि, 5. माटिर चाकिर जुई, 6. अपार्थिव-पार्थिव, 7. आंधारत निजर मुख और 8. हेमंत कालर एटि सन्ध्यिया।

डॉ. शइकिया के रचनात्मक और कलात्मक सिद्धांत अस्पष्ट अथवा अबूझ नहीं है। शइकिया के रचनात्मक और कलात्मक विचार-विवेक, अनुभूति तथा नवीन कला-कौशल से संपृक्त है।

डॉ. शइकिया कल्पना और वास्तव को समकालीन बोध के साथ शामिल कर सृजन-संसार में डूबते दिखाई देते हैं। शायद यही कारण है कि डॉ. शइकिया की कहानियों में जीवन का कोई अंत नहीं है। नवीन कौशल के साथ कहानी लिखने वाले शइकिया की प्रारंभिक कहानियाँ पारंपरिक कहानियाँ जैसी ही दिखाई देती हैं। लेकिन बाद की कहानियों में अवस्थितिवादी विचारधारा की सक्रियता दिखाई देती है। अवचेतन पृथ्वी की खोज प्रखर रूप में दिखाई देता है। अमूर्त भावनाओं के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए मनोजगत की निरंतर अंधी चीत्कार चरम सत्य के रूप में दिखाई देता है। शइकिया की कहानियों में उनके मौलिक विचार और दृष्टि सुस्पष्ट नजर आता है। अवस्थितिवादी विचारधारा से संपुष्ट नगेन शइकिया की कहानियों में यद्यपि व्यक्ति की निजता को अग्राधिकार प्राप्त है तथापि वह समाज जीवन से कटा हुआ नहीं है। इस संबंध में डॉ. प्रह्लाद कुमार का कथन उल्लेखनीय है:-

"नगेन शइकिया की कहानियों की अपारंपरिक शैली कहानी को ऐसा स्वरूप प्रदान करती है कि कई बार अनेक पाठक यह समझ ही नहीं पाते कि कहानीकार दरअसल क्या कहना चाहते हैं। शायद यही कारण है कि पाठक सहजता से इस बात का अनुमान नहीं लगा सकते कि नगेन शइकिया एक प्रखर समाज सचेतक लेखक हैं या उनकी कहानियों में प्रखर समाज चेतना दिखाई देती है। कारण अन्य परंपरावादी लेखकों की तरह नगेन शइकिया ने समाज सचेतनता को कहानी अथवा चरित्र निर्माण के अध्ययन से अभिव्यक्त नहीं किया है। बल्कि उन्होंने अपनी कहानियों में आवेगपूर्ण उक्ति, प्रत्युक्ति, उत्तेजनापूर्ण वातावरण का निर्माण कर उसके अध्ययन से समाज के व्यभिचारी चरित्रों की आलोचना की है। 'छबि आरु प्रेम', 'तारुण्यर आत्महत्या', 'एन्दूर आरु एन्दूर' आदि कहानियों को देखने से यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि नगेन शइकिया की कहानियों में प्रखर समाज चेतना विद्यमान है"।1

कहानी केवल अपने एक वक्तव्य को अभिव्यक्त करती है। अनावश्यक व्याप्ति का अवसर इसमें नहीं होता। गतिशील जीवन से कहानीकार की अनुभूति महज कोई एक घटना आहरित करती है। कहानी कई घटनाओं को अनभिव्यक्त छोड़कर पाठक के दिलो-दिमाग को झकझोर जाने के लिए कुछ पहेलियाँ छोड़ जाती है। पाठक समाज स्वयं ही इन पहेलियों का हल निकालता है। नगेन शइकिया की प्रखर समाज चेतना को समझने के लिए उनकी कहानियों में छिपे कला-कौशल को समझना आवश्यक है।

शइकिया की कहानियों में पारिवारिक जीवन : व्यंजनापूर्ण और काव्यिक भाषा से समृद्ध शइकिया की कहानियों में सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग 'परिवार' के अनेक दृश्य दिखाई देते हैं। परिवार का आर्थिक चित्र और निम्न मध्य वर्ग के चरित्रों के क्रियाकलापों की अभिव्यक्ति में विशेष ज़ोर दिया गया है। वैवाहिक जीवन की परेशानियों से युवावस्था की कल्पनाओं का अंत और प्रत्येक क्षेत्र में नपुंसकत्व उतर आने का चित्र भी दिखाई देता है। 'बंधकोठात धुमुहा' नामक पुस्तक में संकलित कहानी 'मई एटा जेठीये केलों' नामक कहानी के नायक की मृत्यु एक मोटर दुर्घटना में हो जाती है और वह एक छिपकली में रूपांतरित हो जाता है। इसके बाद कहानी रूपात्मक स्वरूप में आ जाती है और पत्नी, मित्र आदि सभी के दर्शन होते हैं।

'माटिर चाकिर जुई' संकलन की कई कहानियों में पारिवारिक परिवेश का चित्रण है। 1967 में प्रकाशित 'पुतला घोरा' नामक कहानी में एक गरीब पिता की दुर्दशा का चित्रण है। आर्थिक रूप से कमजोर, अल्प वेतन प्राप्त करने वाले एक पिता की असहाय अवस्था और विवशता ही कहानी की मूल संवेदना है। 1967 में रामधेनु में प्रकाशित 'रोगमुक्ति' कहानी का उल्लेख भी इस संदर्भ में किया जा सकता है। बाद में इस कहानी का शीर्षक बदलकर 'मृत्युर उत्तापत' रखकर इसे 'आंधारत निजर मुख' नामक पुस्तक में संकलित किया गया। इस कहानी का मूल विषय गोलाप नामक एक गरीब शिक्षक की आर्थिक दुरवस्था का वर्णन है जिसके माध्यम से धनवान समाज का मुखौटा उजागर करने का प्रयास किया गया है। गोलाप की गरीबी के कारण तथाकथित अभिजात्य की पोशाक पहनने वाले ससुर के

Scanned with CamScanner